पंजाब

पंजाब के 14 अधिक व्यापकता वाले जिलों में मध्य मीडिया लोक अभियान का आरंभ

पंजाब राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा 14 से 29 फरवरी, 2016 के बीच 14 अधिक व्यापकता वाले जिलों में लोक मीडिया अभियान को सफलतापूर्वक लागू किया गया। इसके तहत लोगों के बीच एच.आई.वी. की रोकथाम, युवा अरक्षितताओं और स्वैच्छिक परीक्षण मुद्दों पर आधारित प्रमुख संदेश दिए गए। आई.सी.टी.सी. और ओ.एस.टी. केन्द्रों में उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर डैप्कू और सी.एम.ओ. द्वारा जिलों की पहचान किया, जबकि राज्य जनसंचार के अधिकारियों द्वारा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के समन्वय से मार्ग योजना तैयार किया गया।

क्षेत्र विशेष लोकप्रिय लोक मंडलियों ने 14 जिलों के दूर–दराज के गाँवों में लोगों तक पहुँचकर, महिलाओं और युवाओं को लक्षित करके अपने प्रदर्शन द्वारा इसके बारे में बताया।

इस प्रकार, प्रशिक्षित मंडलियों ने 14 जिलों में एक लाख से अधिक लोगों (पुरूष और महिला दोनों) के गाँवों में उनके दहलीज़ तक पहुँचकर लगभग 500 प्रदर्शन किया था। युवा समूहों ने तहे दिल से लोक टीम को बधाई दी। प्रदर्शनों के दौरान, एस.ए.सी.एस. आई.ई.सी. टीम ने संबंधित जिलों के डी.एस.टी. टीम द्वारा मुद्रित सूचना सामग्री और काउन्सिलिंग पश्चात सुविधा का प्रचार–प्रसार सुनिश्चित किया। आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता की टीमों के साथ–साथ स्थानीय पंचायत सदस्यों ने सार्थक प्रयास कर स्थानीय भीड़ को जुटाने में सहयोग किया।

चयनित लोक मंडली अब अनुमोदित ए.ए.पी. के अनुसार राज्य वित्त वर्ष 2016–17 में अपना प्रदर्शन देने हेतु तैयारी कर रही है।

समुदाय के सम्मिलित क्षेत्रों में लोक संगीत के प्रदर्शन की झलकः

कु0 रेखा बैरी
जे.डी .आई.ई.सी. (पी.एस.ए.सी.एस.)

एच.आई.वी. की रोकथाम और स्वस्थ जीवन शैली पर युवाओं को प्रशिक्षित करने हेतु आर.आर.सी. स्वयंसेवक की एक पहल

देश में मणिपुर में एच.आई.वी./एड्स की व्यापकता सबसे अधिक है। राष्ट्रीय स्तर पर एवं राज्य स्तर पर किशोरों और युवाओं को एच.आई.वी. के प्रति जागरूक और शिक्षित करने का प्रयास एक निरंतर प्रक्रिया है। मणिपुर राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी, एन.वाई.के.एस. के तहत यूथ क्लबों के युवा स्वयंसेवकों हेतु प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण (टी.ओ.टी.) का संचालन कर रहा है। ये यूथ क्लब राज्य के दूर–दराज के क्षेत्रों में स्थित हैं। प्रशिक्षण दिसम्बर, 2015 और जनवरी 2016 के बीच तीन वर्गों में इम्फाल में शुरू किया गया।

इस टी.ओ.टी. का मुख्य उद्देष्य एच.आई.वी./एड्स की रोकथाम और स्वस्थ आदतों पर संदेश का प्रसार करने के लिए प्रशिक्षित स्वयंसेवकों के माध्यम से 23,625 ग्रामीण युवाओं तक पहुँच बनाना है। लगभग 54 पुरूष, जिसमें से 17 आर.आर.सी. सदस्य हैं और 17 युवा और तेजस महिला स्वयंसेवक प्रशिक्षण सत्र का संचालन करने के लिए तैयार हैं। प्रशिक्षित स्वयंसेवक आगे ग्रामीण क्षेत्रों में जायेंगे और अन्य युवा समूहों के साथ अंतर–वैयक्तिक संचार (आई.पी.सी.) सत्र का संचालन करेंगे। टी.ओ.टी. के मुख्य विषय निम्नलिखित मुद्दों पर ध्यान देना है यथा–एच.आई.वी./एड्स की रोकथाम, युवा जोखिम, कलंक और भेदभाव एवं मादक द्रव्यों का सेवन।

मणिपुर सरकार 22 लाख रुपयों की आर्थिक सहायता के माध्यम से उपरोक्त प्रशिक्षण सत्रों की कुल लागत में सहयोग कर रही है।

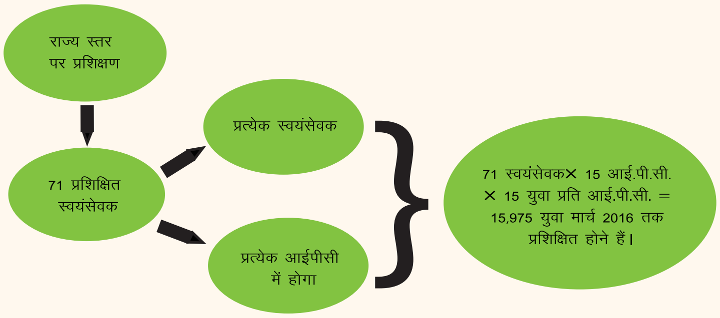

मि० केएच० प्रदीप कुमार, मणिपुर राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के पूर्व ब्रांड एम्बेसडर ने अपना अनुभव बाँटते हुए

यूथ क्लब के स्वयंसेवकों द्वारा आई.पी.सी. सत्र का संचालन

मि० फन्जोउबम लन्नगंबा, ए.डी. ;युवाद्ध
मणिपुर राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी

राज्यों से

गुजरात

पी.पी.पी. मोड में गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा लोक मीडिया अभियान की पहल

पिछले दशक के दौरान, सरकारी निजी कंपनी भागीदारी मॉडल में विभिन्न सरकारी हस्तक्षेपों का कार्यान्वयन गुजरात में काफी सफल रहा है। इससे प्रेरणा लेते हुए, राज्य में मौजूद सकारात्मक भावना का लाभ उठाते हुए, गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा एक अभिनव अभियान के तहत, बड़ी कंपनियों और बड़े औद्योगिक घरानों (टाटा नैनो, अहमदाबाद, लार्सन एंड टुब्रो, सूरत, परिमल ग्लास, वडोदरा) और प्रसिद्ध सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (कांडला पोर्ट ट्रस्ट, कच्छ और ओ.एन.जी.सी., अहमदाबाद व मेहसाणा) के सहयोग से लोक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ये सभी कार्यक्रम कंपनियों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा सी.एस.आर. के तहत वित्त पोषित थे तथा गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने इन्हें क्रियान्वित किया। इन कार्यक्रमों का प्रदर्शन नाको–परीक्षित स्क्रिप्ट का उपयोग करते हुए गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा प्रशिक्षित और सूचीबद्ध लोक मंडलियों द्वारा किया गया। इन कार्यक्रमों का अनुश्रवण गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी और डी.एस.टी. (डी.एस./आई.सी.टी.सी. परामर्शदाताओं/आशा एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं) द्वारा किया गया। इन कार्यक्रमों ने राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के तहत गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा आई.ई.सी. प्रयासों/हस्तक्षेपों के विस्तार हेतु, एच.आई.वी./एड्स की मुख्य धारा और बाह्य वित्त पोषण दोनों उत्पन्न करने हेतु अनुसंधान के लिए नए पोत परिवहन तथा तेल एवं पेट्रोलियम मंत्रालय और नाको के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाने से व मुख्य धारा के लिए संयुक्त कार्यकारी समूह की योजना बैठक में उनके संबंधित राज्य समकक्षों की मजबूत और सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने में गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी को भरपूर मदद मिली। औद्योगिक प्रमुख –टाटा नैनो, एल एंड टी एवं परिमल ग्लास, जो गुजरात में संबंधित अधिक व्यापकता वाले जिलों में हावी उपस्थिति रखते हैं, एच.आई.वी./एड्स की मुख्य धारा के लिए राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन कार्यक्रम के प्रयासों के साथ हाथ मिलाने व अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने के लिए वित्तीय सहायता और साधन के साथ आगे आए। गुजरात में उच्च प्राथमिकता वाले जिलों के 42 गाँवों में कुल 8059 दर्शकों, जिसमें 4881 पुरूष और 3178 महिला शामिल हैं, को लोक मीडिया अभियानों के दौरान कवर किया गया। ये अभियान संबंधित जिलों में उपलब्ध देखभाल, सहायता और इलाज की सुविधा को बढ़ावा देने के साथ–साथ रोकथाम के बारे में जागरूकता पैदा करने पर केन्द्रित थे। एच.आई.वी./एड्स से संबंधित कलंक और भेदभाव को हटाने पर भी जोर दिया गया।

मि० हेमन्त शुक्ला
जे.डी. (आई.ई.सी.) गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी

कांडला बंदरगाह पर लोक कार्यक्रम

कांडला बंदरगाह पर लोक कलाकार

टाटा नैनो द्वारा लोक कार्यक्रमों का आयोजन

टाटा नैनो के श्रमिकों द्वारा लोक कार्यक्रमों का दर्शन

परिमल ग्लास कारखाने में लोक संगी का प्रदर्शन

राज्यों से

चंडीगढ़

एड्सकॉन 5 – एड्स मुक्त विश्व की दिशा में एक सम्मेलन

यह सम्मेलन मुख्य रूप से एड्स नियंत्रण कार्यक्रम में समुदाय को शामिल करने के प्रयास में और उन्हें जागरूक करने के लिए मुख्यधाराकरण की गतिविधि के रूप में नियोजित की गई थी। एच.आई.वी./एड्स के नियंत्रण के संबंध में किए गए सभी प्रयासों को सुदृढ़ता प्रदान करना और सभी भागीदारों को एक साथ एक मंच पर लाना, सम्मेलन का उद्देश्य था। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 300 प्रतिनिधियों, जिसमें चिकित्सक, पैरा मेडिकल स्टाफ, सामाजिक वैज्ञानिक, सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ एवं विधार्थी शामिल थे, ने सम्मेलन में भाग लिया। संचार, नई पद्धति और प्रभाव के सत्र के दौरान उन्हें यह समझाया गया कि एच.आई.वी./एड्स के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए नए माध्यम का इस्तेमाल किस प्रकार किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर चलाए गए कुछ अभियानों की सफलता की कहानी प्रस्तुत की गई। श्री कौसतब शर्मा, आई.पी.एस., जोनल डॉयरेक्टर, स्वापक नियंत्रण ब्यूरो, चंडीगढ़, की अध्यक्षता में गठित पैनल ने नशीली दवाओं की पूर्ति, मांग और नुकसान को कम करने के तरीकों का पता लगाया। मि० ओसामा तविल, यूएनएड्स कंट्री समन्वयक, नई दिल्ली, ने सतत् विकास लक्ष्यों और 2030 तक एच.आई.वी./एड्स के उन्मूलन के लिए लक्ष्यों के बारे में बताया। प्रस्तुत किए गए सर्वोत्तम पोस्टर को पुरस्कार प्रदान किए गए।

एड्सकॉन–5 में परियोजना निदेशक, चंडीगढ़ राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के साथ राज्य के प्रतिभागी

डॉ० बी० बी० रेवाड़ी, एन.पी.ओ.(ए.आर.टी.) नाको ने राष्ट्रीय एकीकृत जैविक और व्यवहार सर्वेक्षण (आई.बी.बी.एस.) एवं एच.आई.वी. महामारी को नियंत्रित करने के उद्देष्य से 90:90:90 के अद्यतन लक्ष्य पर एक प्रस्तुतीकरण दिया, ताकि एच.आई.वी. किसी आबादी या देश में सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरे के रूप में लंबी अवधि तक मौजूद न रहे।

चंडीगढ़ में 26 एवं 27 फरवरी, 2016 को एड्सकॉन–5 में विभिन्न राज्यों से गणमान्यों एवं प्रतिभागियों ने भाग लिया।

डॉ० वनिता गुप्ता, परियोजना निदेशक, चंडीगढ़ एस.ए.सी.एस.

जम्मू एवं कश्मीर

जम्मू एवं कश्मीर में पी.एल.एच.आई.वी. द्वारा "आर्ट ऑफ लिविंग" का अभ्यास

जम्मू एवं कश्मीर राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के आई.ई.सी. प्रभाग द्वारा 23 एवं 24 फरवरी, 2016 को जम्मू में "आर्ट ऑफ लिविंग" पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य पी.एल.एच.आई.वी. के जीवन में सकारात्मक प्रभाव लाना था। लक्षित प्रतिभागी पी.एल.एच.आई.वी. थे, जो वर्तमान में जम्मू क्षेत्र में ए.आर.टी. उपचार पर थे। प्रतिभागियों की समग्र प्रतिक्रिया बहुत सकारात्मक थी। सत्र का हिस्सा बनने पर उन्होंने उल्लेखनीय उत्साह और प्रसन्नता दिखाई।

पी.एल.एच.आई.वी. द्वारा आर्ट ऑफ लिविंग का अभ्यास

मि० रिशीश खजुरिया, ए.डी. (आई.ई.सी.) जे.एंड.के. एस.ए.सी.एस

राज्यों द्वारा ई.एल.एम. गतिविधियाँ–

एन.ए.सी.पी. 4 के अन्तर्गत, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) ने उद्योगों के साथ उनके ही संसाधनों का प्रयोग कर अनौपचारिक श्रमिकों को एच.आई.वी./एड्स सेवाएँ प्रदान करने हेतु सम्बद्ध होने के लिए नियोक्ता चलित मॉडल (ई.एल.एम.) विकसित किया है। जनवरी 2016 के अंत तक, 24 राज्यों के 23 क्षेत्रों को कवर करते हुए कुल 256 उद्योगों ने एच.आई.वी./एड्स गतिविधियों को लागू करने के लिए संबंधित राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों (एस.ए.सी.एस.) के साथ भागीदारी की है। विभिन्न राज्यों में निम्नलिखित सहयोगी उद्योगों ने एच.आई.वी./एड्स के संदर्भ में इन गतिविधियों को चलाया।

डॉ० के० मदन गोपाल,
राष्ट्रीय प्रवास इकाई (टी.आई.) (नाको)

बंगलूरू ग्रामीण, कर्नाटक में के. मोहन एक्सपोर्ट्स में जनवरी–2016 में जागरूकता कार्यक्रम

जनवरी–2016 में नई दिल्ली में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से एच.आई.वी. के प्रति जागरूकता – डी.एम.आर.सी. आर.के. पुरम

मर्मगोआ, गोआ में जनवरी–2016 को एम.पी.टी. परिसर में एस.टी.आई. पर प्रशिक्षण

गुडगांव, जनवरी, 2016 को रिको ऑटो इंडस्ट्रीज में एच.आई.वी./एड्स के प्रति जागरूकता पर बैठकों का संचालन

एल एंड टी निर्माण स्थल, सिद्धुर ए.पी एंड टी.एस. में एच.आई.वी. पर जागरूकता सत्र

जनवरी–2016 में बिहार में ए.सी.आई.एल. यूनिट में फिल्म शो एवं जागरूकता शिविर,

चन्द्रपुर, महाराष्ट्र में, जनवरी–2016 को अंबुजा सीमेंट में एच.आई.वी. जागरूकता सत्र

हैदराबाद, तेलंगाना में दिसम्बर–2015 में अपोलो फाउंडेशन द्वारा ई.एल.एम. के तहत अनौपचारिक श्रमिकों एवं ट्रक ड्राइवरों के लिए स्वास्थ्य शिविर

दिसम्बर–2015 में जयपुर, राजस्थान में एल.टी. साइट–सोजीत्ज–एल एंड टी कंसोर्टियम में एच.आई.वी. जागरूकता

अहमदाबाद, गुजरात–दिसम्बर–2015 में टाटा नैनो संयंत्र में एच.आई.वी./एड्स के प्रति जागरूकता,

दादरी, उत्तर प्रदेश, जनवरी–2016 में अंबुजा संयंत्र में एच.आई.वी. के प्रति जागरूकता के लिए नुक्कड नाटक

तिरूवनंतपुरम, केरल, दिसम्बर 2015 में टेक्सपोर्ट में स्वास्थ्य शिविर और आउटरीच का आयोजन

स्रोत प्रवासन जिलों में गहन स्वास्थ्य शिविर और संचार गतिविधियाँ

प्रवासियों और उनके जीवनसाथी के लिए रोकथाम के प्रयासों को सुदृढ़ करने एवं निरंतर सेवा सुनिश्चित करने की एक पद्धति

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) अपनी राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों (एस.ए.सी.एस) के माध्यम से प्रवासियों और उनके जीवनसाथियों के लिए त्योहारों के मौसम में विशेष रूप से दशहरा, दीपावली, ईद और होली आदि में वापसी की अवधि के दौरान चिकित्सा और निवारक सेवाएँ प्रदान करने के लिए गहन स्वास्थ्य शिविर एवं संचार गतिविधियों का आयोजन करता है। इन स्वास्थ्य शिविरों में सामान्य स्तर पर स्वास्थ्य की जाँच, एच.आई.वी. परीक्षण सुविधाएँ, परामर्श, कंडोम वितरण, टीबी और एस.टी.आई. उपचार संबंधी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। जनसमूह अभियानों के द्वारा, लोक मंडलियाँ और आई.ई.सी. वैन दूर–दराज के गाँवों में पहुँचकर प्रवासी परिवारों को मुक्त स्वैच्छिक एच.आई.वी. और एस.टी.आई. परीक्षण का लाभ उठाने एवं जागरूकता पैदा करने हेतु प्रोत्साहित और जागरूक करती हैं। इन शिविरों का आयोजन एन.एच.एम., जिला स्वास्थ्य समिति, महिला एवं बाल कल्याण विभाग, ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थाओं के सहयोग और करीबी समन्वय से होता है। वित्तीय वर्ष 2015–16, (अक्टूबर 2015 से मार्च 2016), में असम, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा पं० बंगाल के 83 जिलों में स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया। इस वित्तीय वर्ष में सात राज्यों में कुल 781 स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया एवं 1.68 लाख लोगों को स्वास्थ्य शिविरों में सेवाएँ प्रदान की गईं।

राष्ट्रीय प्रवासी इकाई
टी. आई. प्रभाग, नाको

स्वास्थ्य शिविर बंगाल बाजार, असम

स्वास्थ्य शिविर हजोज असम

स्वास्थ्य शिविर राजस्थान

उदाली लंका, असम में स्वास्थ्य शिविर

स्वास्थ्य शिविर कूच बिहार पं० बंगाल

रायबरेली उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य शिविर

ए.आर.टी. केन्द्रों में सभी एच.आई.वी.–टीबी के सह–संक्रमित मरीजों के लिए प्रथम पंक्ति क्षयरोग विरोधी उपचार (ए.टी.टी.) के लिए दैनिक नियम की शुरूआत

भारत सरकार द्वारा 2015 में 5 अधिक भार वाले राज्यों (आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु) में 30 ए.आर.टी. केन्द्रों पर उन्नत मोबाइल आधारित नशीली दवाओं के सेवन अनुपालन की ट्रैकिंग प्रणाली के साथ एच.आई.वी.–टीबी के सह–संक्रमित मरीजों के लिए दैनिक क्षयरोग विरोधी उपचार आहार का शुभारंभ किया। राष्ट्रीय विशेशज्ञ समिति, जो ड्रग संवेदित टीबी के लिए ड्रग आधारित उपचार नियम के प्रकार का परीक्षण करती है, द्वारा भारत में सभी एआरटी केन्द्रों पर एकल खिड़की सेवाओं के माध्यम से पी.एल.एच.आई.वी. के बीच सभी ड्रग संवेदित टीबी के लिए दैनिक उपचार नियम की दिशा में आगे बढ़ने हेतु संशोधित राष्ट्रीय टीबी नियंत्रण कार्यक्रम (आर.एन.टी.सी.पी.) को सिफारिश की। इस संबंध में केन्द्रीय टीबी प्रभाग ने राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (बी.एस.डी. एवं सी.एस.टी. डिविज़न) के साथ मिलकर फरवरी, 2016 में राष्ट्रीय टीबी संस्थान (एन.टी.आई.), बंगलोर में ए.आर.टी. केन्द्रों पर सभी एच.आई.वी.–टीबी के सह–संक्रमित मरीजों के लिए प्रथम पंक्ति क्षयरोग विरोधी उपचार (ए.टी.टी.) के लिए दैनिक उपचार नियम के संबंध में प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण (टी.ओ.टी.) के दो गुटों का संचालन किया। दो गुटों में सभी राज्यों के एस.ए.सी.एस. अधिकारियों, राज्य टीबी–एच.आई.वी. समन्वयक, क्षेत्रीय परामर्शदाताओं, राज्य टीबी के पदाधिकारियों एवं आर.एन.टी.सी.पी. सलाहकार सहित कुल 159 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के अधिकारियों, राज्य टीबी–एच.आई.वी. समन्वयक, क्षेत्रीय परामर्शदाता, राज्य टीबी अधिकारियों एवं आर.एन.टी.सी.पी. सलाहकार सहित सभी राज्यों से प्रतिभागियों ने एन.टी.आई., बंगलौर में टी.ओ.टी. में भाग लिया।

डॉ राजेश डी. देशमुख
कार्यक्रम पदाधिकारी एच.आई.वी.–टीबी

तीसरी पंक्ति ए.आर.टी. को नई दिल्ली में विश्व टीबी दिवस पर भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया था

राष्टीय एड्स नियंत्रण संगठन और केन्द्रीय टीबी प्रभाग द्वारा संयुक्त रूप से ताज पैलेस, नई दिल्ली में 21 मार्च, 2016 को विश्व टीबी दिवस पर नई पहल की शुरूआत की गई। इस साल के विश्व टीबी दिवस अभियान मजबूत और कार्रवाई उन्मुखी टैगलाईन "टीबी को समाप्त करने के लिए एकजुट हों" के साथ शुरू की गई। 2014 में टीबी एच.आई.वी. सवंमित लोगों के लिए प्रमुख संक्रमक हत्यारा साबित हुआ, एच.आई.वी. से होने वाली 3 मौतों में से 1 टीबी की वजह से थी। एच.आई.वी. के साथ जी रहे व्यक्ति में 26 से 31 गुणा और अधिक सक्रिय टीबी के विकसित होने की संभावना है। दुनिया के शीर्ष संक्रामक जानलेवा बीमारी में टीबी की स्थिति एच.आई.वी./एड्स के आसपास है। भारत जो विश्व स्तर पर 20 उच्चतम बोझ वाले देशों में से है, टीबी मुक्त भारत के लिए अपने अभियान के साथ टीबी की देखभाल के लिए सार्वभौमिक पहुँच प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर, टीबी और एच.आई.वी. से संबंधित किए गए विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालने हेतु प्रदर्शनी स्टालों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी क्षेत्र ने टीबी और एच.आई.वी. नियंत्रण से जुड़े सभी हितधारकों को संलग्न करने के लिए देश की प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व किया और "टीबी को समाप्त करने के लिए एकजुट हों" अभियान संदेश को बढ़ावा दिया। माननीय केन्द्रीय मंत्री स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, श्री जे.पी.नड्डा ने अन्य गणमान्यों के साथ नाको के स्टालों का दौरा किया, जिसमें एच.आई.वी./टीबी से अंर्तसंबंधित विभिन्न आई.ई.सी. सामग्रियों और नए पहल पर प्रकाश डाला गया था।

केन्द्रीय मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, श्री जे. पी. नड्डा ने 21 मार्च, 2016 को दिल्ली में "टीबी को समाप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैठक" के उद्घाटन सत्र में नाको के प्रदर्शनी स्टॉल का दौरा किया।

आई.ई.सी. प्रभाग, नाको

आई.डी.यू. तकनीकी संसाधन समूह की बैठक

देश में बड़े पैमाने पर "हानी को कम करने के लिए कार्यक्रम " का वर्णन करने में टी.आर.जी. सदस्यों ने नाको के प्रयासों की सराहना की।

तकनीकी संसाधन समूह की बैठक डॉ. एस. के. खंडेलवाल, प्रोफेसर एवं प्रमुख, नेशनल ड्रग डिपेन्डेन्स ट्रीटमेंट सेन्टर, एम्स, की अध्यक्षता में 19 जनवरी, 2016 को नाको में आयोजित की गई थी। नाको के डी.डी.जी. (टी.आई.), डॉ. नीरज ढींगरा, ने टी.आर.जी. सदस्यों का स्वागत किया और एन.ए.सी.पी.–4 में हुई प्रगति, नए प्रयासों एवं हाल ही में संपन्न हुए आई.बी.बी.एस. के मुख्य निष्कर्षों को प्रस्तुत किया। इस बात पर प्रकाश डाला गया कि आई.डी.यू. समूह के बीच एच.आई.वी. की व्यापकता दर निरंतर रूप से उच्च बनी हुई है तथा टी.आर.जी. सदस्यों के ध्यान में यह बात भी लायी गयी कि एच.आई.वी. कि कम व्यापकता वाले राज्यों में से कुछ राज्यों में बढ़ती हुई प्रवृत्ति को देखा गया है। टी.आर.जी. सदस्यों ने देश में बड़े पैमाने पर "हानी को कम करने के लिए कार्यक्रम " के प्रदर्शन, विशेषकर आई.डी.यू. समूह तक पहुँच एवं विस्तृत सेवा प्रावधानों को स्थापित करने के लिए नाको के प्रयासों की सराहना की। एफ.एच.आई. 360 ने पूर्वोत्तर राज्यों, दिल्ली एवं मुंबई के कार्यक्षेत्रों में 2015 में कराए गए एफ.आई.डी.यू. आंकलन अध्ययन के मुख्य निष्कर्षों को प्रस्तुत किया।

विचारपूर्वक मुख्य बिंदु हैं:–

1. आई.डी.यू. समूह में एच.आई.वी. संक्रमिकता में वृद्धि, एच.आई.वी. की कम व्यापकता वाले राज्य दिखा रहे हैं।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में केंद्रित आई.डी.यू. समूह को संबोधित करना, जो वर्तमान टी.आई. रणनीति के दायरे से बाहर हैं।
3. नये क्षेत्रों में आई.डी.यू. समूहों का उभरना एवं उपयोग की जा रही नशीली दवाओं के प्रकार का चुनाव, वर्तमान "हानि को कम करने की रणनीति व वर्तमान टी.आई. संरचना।
4. ओ.एस.टी. प्राप्त करने वाले मरीजों के लिए चिकित्सकों द्वारा निर्धारित उप इष्टतम खुराक, प्राथमिक अवस्था में खुराक को कम करना, घर ले जाने वाली खुराक, सेवा प्रदाताओं का रवैया, एवं हानी को कम करने के लिए रणनीति के रूप में ओ.एस.टी. पर चिकित्सकों का ज्ञान अथवा समझ।
5. पूर्वाधारित विचारों को खारिज करने के लिए राज्य/क्षेत्र के बाहर से मूल्यांकनकर्ताओं को नियुक्त करना।
6. देश के प्रत्येक जिलों को एक अनूठी संस्था के रूप में विचार करने की जरूरत है, न कि पूरे राज्य/क्षेत्र को, जिला विशेष कार्ययोजना को विकसित करने की आवश्यकता है।

टी.आई .आई.डी.यू. टीम नाको

भारत में टी.जी./एच एवं एम.एस.एम. कार्यक्रमों को मजबूती प्रदान करने की दिशा में एक कदम

नाको के लक्षित हस्तक्षेप प्रभाग द्वारा 22 फरवरी, 2016 को नाको में ट्रांसजेंडर/हिजरा (टी.जी./एच) एवं पुरुषों के साथ यौन संबंध रखने वाले पुरुष (एम.एस.एम.) कार्यक्रमों के लिए तकनीकी संसाधन समूह (टी.आर.जी.) की दो बैठकों का आयोजन किया गया। टी.जी./एच कार्यक्रम की टी.आर.जी. बैठक की अध्यक्षता मि० वेंकटेशन चक्रपाणि, अध्यक्ष, सेंटर फॉर सेक्सुएलिटि हेल्थ रिसर्च एंड पॉलिसी, चेन्नई द्वारा किया गया था, जबकि एम.एस.एम. कार्यक्रम की बैठक सुश्री अंजलि गोपालन, संस्थापक और कार्यपालक/कार्यकारी निदेशक, नाज फाउंडेशन, ट्रस्ट की अध्यक्षता में हुई। टी.आर.जी. सदस्यों सहित समुदाय के प्रतिनिधियों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं, तकनीकी विशेषज्ञों और एस.ए.सी.एस. टी.आई. अधिकारियों ने बैठक में भाग लिया। प्रतिभागियों को कार्यक्रम के प्रदर्शन और विश्लेशण तथा 2014–15 के आई.बी.बी.एस./एच.एस.एस. के मुख्य निश्कर्षों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में निपुणता और लागत अनुकूलन लाने हेतु अगली कार्यवाही पर स्पश्ट चर्चा और प्रतिकिया प्राप्त करने में बैठक कारगर रही। टी.आर.जी. बैठक का मुख्य उद्देष्य समुदाय के प्रतिनिधियों और कार्यक्रम प्रबंधन विशेषज्ञों से मिलने वाले सहयोग से टी.जी./हिजरा और एम.एस.एम. कार्यक्रम को सुदृढ़ करना था। चर्चा मुख्य रूप से टी.आई. सेवा पैकेज के दृश्टिकोण में बदलाव पर, प्रौद्योगिकी (इंटरनेट/मोबाइल ऐप्स) का उपयोग करने हेतु समकक्ष शिक्षकों के कौषल के निर्माण जिससे समान कीमत पर एक बडी आबादी तक पहुंच को विस्तारित किया जा सके, पर केन्द्रित थी। टी.आर.जी. सदस्यों द्वारा राज्य और जिला स्तर पर एक मजबूत संसाधन निकाय के निर्माण पर भी जोर दिया गया। टी.आर.जी. सदस्यों ने टी.जी./एच एवं एम.एस.एम. कार्यक्रमों को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न सिफारिशें भी कीं। बैठक में हुए विचार–विमर्श के आधार पर, डी.डी.जी.–टी.आई. ने भविश्य में चर्चाओं के दौर के अवसरों के बारे में उल्लेख किया जिससे एन.ए.सी.पी. 5 को सूत्रबद्ध करने हेतु मंच प्रदान किया जा सकेगा।

मि0 रजिनॉल्ड टी.डी
पी.ओ. (टी.आई. एम.एस.एम./टी.जी.), नाको

फरवरी 2016 से नए कंडोम अभियान "एक अच्छी आदत" का आंरभ

नाको ने फरवरी 2016 में कंडोम के प्रचार के लिए एक नए अभियान "एक अच्छी आदत" का आंरभ किया। यह प्रचार अभियान नाको की संचार रणनीति का हिस्सा है, जिसके अंतर्गत सुरक्षित यौन संबंध को एच.आई.वी/एड्स की रोकथाम का आधार माना गया है। इस रणनीति के तहत कंडोम इस्तेमाल को बढ़ावा देने के मूल संदेश को प्रसारत करने के लिए नाको अनुमोदित रुपरेखा का चरणबद्ध तरीके से अनुसरण किया गया।

पहला चरण असुरक्षित यौन व्यवहारों से जुड़े खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए था और दूसरा चरण कंडोम इस्तेमाल के पक्ष में प्राथमिकता को प्रोत्साहित करने के लिए था। "एक अच्छी आदत" शीर्षक का यह अभियान कंडोम के नियमित उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए तैयार किया गया है। यह प्रचार अभियान नाको स्वीकृत आधारभूत रुपरेखा के तहत मूल संदेश प्रचारित करने का तीसरा और अंतिम चरण है। नाको इस अभियान में महत्वपूर्ण संदेश के रूप में एच.आई.वी./एड्स, यौनरोग एवं अनचाहे गर्भधारण से रोकथाम के लिए कंडोम को बढ़ावा देने की अपनी रणनीति के साथ अग्रसर है। इस अभियान का प्रसारण टेलीविजन चैनलों, आकाशवाणी, निजी एफ.एम. चैनलों, सिनेमा हॉलों सहित सभी प्रचार माध्यमों के जरिये किया गया जिसमें प्रमुख आउटडोर माध्यम जैसे दिल्ली मेट्रो, बस स्टॉप, बस पैनल, हॉर्डिंग इत्यादि शामिल हैं।

नाको द्वारा पहली बार इंटरनेट का इस्तेमाल एक उपयोगी प्रचार माध्यम की तरह करते हुए इस अभियान का लोकार्पण किया गया और इसे भारत के प्रमुख समाचार, ई–मेल तथा जॉब पोर्टलस जैसे रेडिफ, याहू, नौकरी और एन.डी.टी.वी. पर विज्ञापित किया गया। नाको ने इस 360° अभियान को आई.ई.सी. प्रभाग, टी.एस.जी. तथा पब्लिक हेल्थ फांउडेशन ऑफ इंडिया के समन्वय के साथ विकसित किया है।

श्री सुदर्शन नेगी
संचार प्रबंधक,
टी.एस.जी.–कंडोम प्रचार (नाको)

30–31 मार्च, 2016 को वाशिंगटन डी.सी. में राष्ट्र निर्देशित जानकारी के आदान प्रदान पर तीसरी उच्चस्तरीय बैठक (एच.एल.एम.3) में नाको की भागीदारी।

विश्व बैंक द्वारा वाशिंगटन डीसी में 30–31 मार्च, 2016 के दौरान तीसरी उच्चस्तरीय बैठक (एच.एल.एम.3) का आयोजन इस उद्देश्य के साथ किया गया कि देश के संस्थान किस प्रकार अपने ज्ञान और परिचालन अनुभवों का बेहतर इस्तेमाल कर अति जरूरतमंदों को सार्वजनिक सेवाओं की आपूर्ति में सुधार लाने के लिए कर सकते हैं। एच.एल.एम.3 में 66 देशों और 11 बहुपक्षीय संस्थानों के 400 से अधिक उच्चस्तरीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। प्रतिभागियों ने अपने अनुभवों को साझा किया और जानकारी के आदान प्रदान के लिए देश की क्षमताओं के निर्माण हेतु भविष्य के कदमों पर चर्चा की।

2014 में सियोल में आयोजित जानकारी के आदान प्रदान पर पिछले एच.एल.एम.2 में नाको ने साउथ टू साउथ जानकारी के आदान प्रदान की पहल पर अपने अनुभव साझा किए। एच.एल.एम.2 के पश्चात, तीन स्तरों (आंतरिक, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय) पर व्यवस्थित ढंग से जानकारी के अदान–प्रदान पहल के लिए रणनीति विकसित करने में सहयोग के उद्देश्य के साथ राष्ट्र निर्देशित जानकारी केन्द्र की स्थापना हेतु नाको के समर्थन में विश्व बैंक आगे आया।

एच.एल.एम.3 में नाको को जानकारी के आदान प्रदान पर नाको के अपने अनुभव बांटने के लिए आमंत्रित किया गया था। मि० जिमरीवस के०, टीम लीडर, साउथ टू साउथ जानकारी के आदान प्रदान की पहल का सचिवालय (एस.टू.एस. के.इ.आई.),नाको ने एच.एल.एम.3 में भाग लिया और प्रथम दिन के पूर्ण सत्र 3(तस्वीर 1) के दौरान एक वक्ता के रूप में "संगठनात्मक जानकारी के आदान प्रदान के संचालन" पर नाको के व्यावहारिक अनुभवों को साझा किया । पैनल में अन्य वक्ताओं में इंडोनेषिया के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बी.एन.पी.बी.) मंत्री और एशिया–पैसिफिक वित्त एवं विकास संस्थान (ए.एफ.डी.आई.), चीन के महानिदेशक थे। विश्व बैंक ने पूर्ण सत्र में प्रस्तुत नाको के अनुभव को अधिग्रहित किया और प्रथम दिन के मुख्य बिंदुओं में प्रकाशित किया (तस्वीर 2)।

HIGHLIGHTS FROM MARCH 30

Third High-Level Meeting on Country-led Knowledge Sharing

#hlm3 #ks4dev

Day 1

Knowledge Sharing to Strengthen Public Policies

"People, people, people." Those are the three success factors in strategic and organizational approaches to Knowledge Sharing says Krzysztof Landa, Deputy Minister of Health, Poland.

Why does it Matter?

Client institutions see a vast horizon in capturing and documenting successful solutions not only for South-South learning, but to scaling up best practices internally and domestically (for instance, from one region to another). The latter is vital for consistent implementation and high-quality delivery of public services across often diverse areas in a country. For knowledge sharing to succeed, many agreed that a cultural change was needed as well.

Practical Experiences

Challenges are common for many country institutions to build a strong knowledge culture, a sustainable institutional environment and effective technical skills. "We had to start by building a framework then we used tools and templates for capacity building," said Jimreeves Kirubakaran, National AIDS Control Organization (NACO), Ministry of Health & Welfare, India, in describing the growing success of their national HIV/AIDS program. "We saw a real need for knowledge sharing, especially in terms of responding to the high demand from a lot of countries to learn from India's HIV AIDs program. Success is not about one-time exchanges, but about an institutional transformation towards knowledge. The WBG is pioneering approaches and tools to support country clients in their quest for KS capacities, for example through the Organizational Knowledge Sharing Program (OKS) and the Global Delivery Initiative (GDI).

What Have We Learned

For the future, there is room for learning from the private sector, especially technologies and knowledge clouds to enable access to relevant knowledge in context. Companies such as Microsoft see substantial improvement of financial improvement based on knowledge management, and there is a huge potential to generate dividends from Knowledge Sharing for successful public policy design and implementation.

TWEETS OF THE DAY

We are all suppliers of knowledge and experiences & we are all learners. The question is how to open knowledge flows #hlm3 #kmers

Key areas for KM culture change: digital literacy, social citizenship and collaboration citizenship @jcfmooney

Knowledge management as a leadership management discipline for nations to build sustainable value #hlm3 #ks4dev

मि. जिमरीवस के. ने जानकारी के आदान प्रदान करने के माध्यम से स्वास्थ्य में समाधान की श्रेणी में वृद्धि पर दूसरे दिन के समानांतर सत्र 7.2 में बोला। उन्होंने राष्ट्र निर्देशित जानकारी के आदान प्रदान (जी.पी.के.एस.) पर वैश्विक भागीदारी में भी भाग लिया, जिससे 25 से अधिक सरकारें और अन्य संस्थानों को राष्ट्र निर्देशित जानकारी के आदान प्रदान (जी.पी.के.एस.) पर वैश्विक भागीदारी में शामिल होने का प्रोतसाहन मिला। जी.पी.के.एस. किसी भी व्यक्ति के लिए एक लचीला मंच है, जो हर ऐसे खिलाड़ी के लिए खुला है जो वैश्विक विकास एजेंडा में जानकारी के आदान प्रदान करने की स्थिति में, आपसी सीख और अध्ययन में षामिल होने तथा संस्थागत क्षमताओं के निर्माण हेतु व्यावहारिक/उपयोगी उपकरण के विकास करने में रूचि रखता है।

जानकारी के आदान प्रदान द्वारा स्वास्थ्य समाधान को बढ़ाने पर समानांतर सत्र के पैनलिस्ट।

मि० जिमरीवस के०, डोनर समन्वयक,
टीम लीडर. एस.टू.एस जानकारी के
आदान प्रदान की पहल का सचिवालय, नाको

आगामी कार्यक्रम

अप्रैल 2016

परियोजना निदेशकों
की समीक्षा बैठक

मई 2016

टी.बी. एच.आई.वी से संक्रमित
लोगों के लिए तकनीकी
सलाहकार समूह की बैठक

मई 2016

डैपकु के कामकाज पर
समीक्षा बैठक

मई 2016

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम
4 का मध्यावधि मूल्यांकन

एड्स में सहायता के लिए राष्ट्रीय टोल फ्री हेल्पलाइन

AIDS Helpline 1097

जानें समझें, जुग-जुग जियें!

- राष्ट्रीय टोल फ्री हेल्पलाइन - **24x7**
- प्रारंभ - **1 दिसम्बर, 2014**
- कुल प्राप्त कॉल- **17492 (Jan-Feb-March-2016)**
- परिचालन केन्द्र- **3** (उत्तर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम)
- कॉल का जवाब प्रशिक्षित परामर्श दाताओं द्वारा **हिन्दी और अंग्रेजी एवं 6 क्षेत्रीय भाषाओं** में दिया जाता है

vunij lkfgc x:nokjk es flD[kks ds okf"kZd R;kSgkj gksyk egYyk dh 'kke dks iatkc ,l-,-lh-,l us fofHkUu xfrfof/k;ksa }kjk rhu fnolh; ,p-vkbZ-oh@,M~l tkx:drk vfHk;ku dk vk;kstu fd;kA

मुख्य संपादक – श्री एन.एस. कंग, अपर सचिव एवं डी.जी.स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
संपादक– डा० नरेश गोयल, डी.डी.जी. (एल.एस.) एवं जे.डी. (आई.ई.सी)
संपादकीय पैनल– डा० नीरज ढींगरा, डी.डी.जी. (टी. आई.), डा० शोबिनी राजन, ए.डी.जी (एस.टी.आई. एवं रक्त सुरक्षा),
श्री उग्र मोहन झा, कार्यक्रम प्रबन्धक (सांखिकीय), सुश्री संचाली रॉय, सहलाकार (आई.ई.सी)।
नाको समाचार राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का एक सूचनापत्र है। 9वाँ तल, चंद्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ, नई दिल्ली–110001: दूरभाष: 011–23325343, फैक्स: 011–23731746, www.naco.gov.in
एडिटिंग डिजाइन एवं प्रोडक्शन: The Visual House, ईमेल: tvh@thevisualhouse.in